7 परशुराम-लक्ष्मण संवाद

तुलसीदास

(जन्म : सन् 1532, मृत्यु : सन् 1623)

गोस्वामी तुलसीदास का जन्म उत्तर प्रदेश के बाँदा जिले के राजापुर गाँव में हुआ था। अल्पायु में माता-पिता की मृत्यु के कारण अनाथ बने तुलसी का आरंभिक जीवन अभावों में बीता। उन्होंने गुरु नरहरिदास से ज्ञानार्जन किया था। पत्नी रत्नावली से प्रताड़ित-प्रेरित होकर वे गृहत्याग करके विरक्त हो गए थे। उन्होंने अयोध्या, काशी, चित्रकूट आदि स्थलों का तीर्थाटन किया था।

तुलसीदास जी राम के अनन्य भक्त थे। अपने श्रेष्ठ ग्रंथ 'रामचरितमानस' में उन्होंने राम के चरित्र द्वारा लोकजीवन का आदर्श प्रस्तुत किया है। 'दोहावली', 'कवितावली', 'गीतावली', 'विनय-पत्रिका', 'बरवै रामायण', 'वैराग्य संदिपनी', 'पार्वती मंगल', 'जानकी मंगल', 'रामलला नहछू', 'श्रीकृष्ण गीतावली' आदि उनकी अन्य प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।

ब्रज और अवधी दोनों भाषाओं पर उनका समान अधिकार था। उन्होंने 'विनय-पत्रिका' तथा 'कवितावली' की रचना ब्रजभाषा में और 'रामचरितमानस' की रचना अवधी भाषा में की हैं। 'रामचरितमानस' में मुख्यत छंद दोहा-चौपाई हैं।

प्रस्तुत अंश 'रामचरितमानस' के 'बालकांड' से लिया गया है। रामचन्द्र द्वारा शिवजी के धनुष तोड़े जाने पर परशुरामजी के क्रोध का वर्णन है। परशुरामजी के क्रोधित होने लेखक लक्ष्मण परशुराम को कहते हैं कि हम अपने क्रोध को रोककर असह्य दु:ख सह लेंगे। आप तो वीरता को धारण करनेवाले और धैर्यवान हैं, अत: गाली देते आप शोभा नहीं पाते।

नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा॥
आयसु काह कहिअ किन मोही। सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही॥
सेवकु सो जो करै सेवकाई। अरि करनी करि करिअ लराई॥
सुनहु राम जेहिं सिवधनु तोरा। सहसबाहु सम सो रिपु मोरा॥
सो बिलगाउ बिहाइ समाजा। न त मारे जैहहिं सब राजा॥
सुनि मुनि बचन लखन मुसुकाने । बोले परसुधरहि अपमाने॥
बहु धनुहीं तोरीं लरिकाई। कबहुँ न असि रिस कीन्हि गोसाईं॥
एहि धनु पर ममता कोहि हेतू। सुनि रिसाइ कह भुगुकुलकेतू॥

दो॰ - रे नृप बालक काल बस बोलत तोहि न सँभार।
धनुही सम तिपुरारि धनु बिदित सकल संसार ॥२७१॥

लखन कहा हँसि हमरे जाना। सुनहु देव सब धनुष समाना॥
का छति लाभु जून धनु तोरे। देखा राम नयन के भोरे॥
छुअत टूट रघुपतिहु न दोसू। मुनि बिनु काज करिअ कत रोसू॥
बोले चितइ परसु की ओरा। रे सठ सुनेहि सुभाउ न मोरा॥
बालकु बोलि बधउँ नहिं तोही। केवल मुनि जड़ जानहि मोही॥
बाल ब्रह्मचारी अति कोही। बिस्व बिदित छत्रियकुल द्रोही॥

भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्ही। बिपुल बार महिदेवन्ह दीन्ही॥
ससबाहु भुज छेदनिहारा। परसु बिलोकु महीपकुमारा॥

दो०– मातु पितहि जनि सोचबस करसि महीसकिसोर।
गर्भन्ह के अर्भक दलन परसु मोर अति घोर॥२७२॥

बिहसि लखनु बोले मृदु बानी। अहो मुनीसु महा भटमानी॥
पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारू । चहत उड़ावन फूँकि पहारू॥
इहाँ कुम्हड़बतिया कोउ नाहीं। जे तरजनी देखि मरि जाहीं॥
देखि कुठारु सरासन बाना। मैं कछु कहा सहित अभिमाना॥
भृगुसुत समुझि जनेउ बिलोकी। जो कुछ कहहु सहउँ रिस रोकी॥
सुर महिसुर हरिजन अरु गाई। हमरें कुल इन्ह पर न सुराई॥
बधे पापु अपरकीरति हारे। मारतहूँ पा परिअ तुम्हारे॥
कोटि कुलिस सम बचनु तुम्हारा। ब्यर्थ धरहु धनु बान कुठारा॥

दो०– जो बिलोकि अनुचित कहेउँ छमहु महामुनि धीर।
सुनि सरोष भृगुबंसमनि बोले गिरा ग़भीर॥२७३॥

कौसिक सुनहु मंद यहु बालकु। कुटिल कालबस निज कुल घालकु॥
भानु बंस राकेस कलंकू। निपट निरंकुस अबुध असंकू॥
काल कवलु होइहि छन माहीं। कहउँ पुकारि खोरि मोहि नाहीं॥
तुम्ह हटकहु जौं चहहु उबारा। कहि प्रतापु बलु रोषु हमारा॥
लखन कहेउ मुनि सुजसु तुम्हारा। तुम्हहि अछत को बरनै पारा॥
अपने मुँह तुम्ह आपनि करनी। बार अनेक भाँति बहु बरनी॥
नहिं संतोषु त पुनि कछु कहहू। जनि रिस रोकि दुसह दुख सहहू॥
बीरब्रती तुम्ह धीर अछोभा। गारी देत न पावहु सोभा॥

दो०–सूर समर करनी करहिं कहि न जनावहि आपु॥
विद्यमान रन पाइ रिपु कायर कथहिं प्रतापु॥२७४॥

शब्दार्थ-टिप्पणी

संभुधनु शिवजी का धनुष **भंजनिहारा** तोड़नेवाला **आयसु** आज्ञा, अनुमति **अरि** शत्रु **लराई** लड़ाई **तोरा** तोड़ा **रिपु** शत्रु **बिलगाउ** अलग **जैहहिं** जाएँगे **तोरीं लरकिाई** बचपन में तोड़ डाली **भृगुकुलकेत्** भृगुवंश की ध्वजारूप, **नृप** राजा **छति लाभु** हानि–लाभ **दोसू** दोष **रोसू** रोष **सठ** दुष्ट **अति कोही** अति क्रोधी **बिस्व** विश्व **भूप** राजा **परसु** फरसा **गर्भन्ह के अर्भक** गर्भ के बच्चे **घोर** भयानक **महाभटमानी** बड़े अभिमानी **कुठारू** फरसा **पहारू** पहाड़ **कुम्हड़बतिया** कुम्हड़े का छोटा कच्चा फल **भृगुसुत** भृगु के पुत्र. **सुर** देवता **महिसुर** ब्राह्मण **हरिजन** भगवान के भक्त **गाई** गौ **गिरा** वाणी

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दिए गए विकल्पों से चुनकर लिखिए :

(1) शिवजी के धनुष को किसने तोड़ा था ?

(क) लक्ष्मणजी ने (ख) श्रीरामजी ने (ग) भरतजी ने (घ) शत्रुघ्नजी ने

(2) 'आप बिना कारण ही क्रोध क्यों कर रहे हैं' यह वाक्य कौन बोलता है ?

(क) भरत (ख) श्रीराम (ग)लक्ष्मण (घ) सीताजी

(3) 'मेरा फरसा बड़ा भयानक है यह गर्भ के बच्चों का भी नाश करनेवाला है' यह वाक्य कौन बोलता है ?

(क) श्रीराम (ख) परशुराम (ग)लक्ष्मण (घ) सीताजी

(4) परशुराम लक्ष्मणजी को कैसा बालक कहते है ?

(क) कम बुद्धिवाला (ख) कुबुद्धि और कुटिल (ग)सुबुद्धि-सुशील (घ) सुबुद्धिवाला

2. एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :

(1) शिवजी का धनुष तोड़नेवाले को परशुराम किसके समान अपना शत्रु कहते हैं ?

(2) परशुराम का व्यक्तित्व कैसा है ?

(3) सहस्त्रबाहु की भुजाओं को काटनेवाले अस्त्र का नाम क्या था ?

3. दो-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए :

(1) परशुराम का फरसा कैसा है और वह किसका नाश करनेवाला है ?

(2) परशुराम के क्रोधरूपी अग्नि को बढ़ते देखकर कौन शीतल वचन बोलता हैं ?

(3) श्रीरामजी परशुराम को कैसा मुनि बताते हैं ?

(4) लक्ष्मणजी के कठोर बचन सुनकर परशुरामजी अपने हाथ क्या उठा लेते हैं ?

4. पाँच-छः पंक्तियों में उत्तर लिखिए:

(1) परशुरामजी का क्रोध शांत करने के लिए श्रीरामजी ने क्या कहा ?

(2) परशुरामजी का क्रोध देखकर लक्ष्मणजी क्या कहते हैं ?

5. मानक हिन्दी रूप लिखिए:

संभु छति कोही पहारू गाई गारी सोभा

6. **निम्नलिखित चौपाई का भावार्थ समझाइए :**

'भृगुसुत समुझि जनेउ बिलोकी। जो कछु कहहु सहउँ रिस रोकी॥
सुर महिसुर हरिजन अरु गाई। हमरे कुल इन्ह पर न सुराई॥'

योग्यता-विस्तार

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- पठित चौपाइयों के आधार पर परशुराम के क्रोध का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- परशुराम-लक्ष्मण संवाद का विद्यार्थियों के द्वारा नाट्य-मंचन करवाए।

●